❁ 27 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

❁ ज्ञान-

1] माया पहली गफ़लत कराती जो पढ़ाई को ही छोड़ देते। भगवान् पढ़ाते है, यह भूल जाता है। बाप के बच्चे ही बाप की पढ़ाई को छोड़ देते हैं, यह भी वन्डर है। नहीं तो नॉलेज ऐसी है जो अन्दर ही अन्दर खुशी में नाचते रहें, परन्तु माया का प्रभाव कोई कम नहीं है। वह पढ़ाई को ही छुड़ा देती है। पढ़ाई छोड़ी माना अबसेन्ट हुए।

2] बाप बिगर कोई भी यह बातें समझा नहीं सकते। यह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। यह तो हमारा बाबा है। इनका कोई माँ-बाप है नहीं। कोई कह नहीं सकते कि शिवबाबा किसी का बच्चा है। यह बातें बुद्धि में घड़ी-घड़ी याद रहें– यही मनमनाभव है।

3] वह नॉलेजफुल है, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, ज्ञान का सागर है। चैतन्य होने कारण सब कुछ सुनाते हैं। कहते हैं– बच्चों, मैं जिसमें प्रवेश हुआ हूँ इन द्वारा मैं तुमको आदि से लेकर इस समय तक सब राज़ समझाता हूँ।

4] गर्भ जेल में बहुत सजायें खानी पड़ती हैं। वहाँ पर फिर ट्रिब्युनल बैठती है। सब साक्षात्कार होत हैं। बिगर साक्षात्कार किसको सजा दे नहीं सकते। मूँझ पड़े कि यह सजा हमको क्यों मिलती है। बाप को मालूम रहता है कि इसने यह पाप किया है, यह भूल की है। सब साक्षात्कार कराते हैं। उस समय ऐसा फील होता है जैसेकि इतने सब जन्मों की सजा मिल रही है। यह जैसे सब जन्मों की इज्ज़त गई।

5] तो अब बाप कहते हैं– बच्चे, यह तो दुनिया ही दोज़क है और उसमें फिर यह जो नाटक (सिनेमा) हैं, वह भी दोज़क है। यह देखने से ही सबकी वृत्तियाँ खराब हो जाती हैं। अखबारें पढ़ते हैं, उसमें अच्छी-अच्छी माइयों के चित्र देखते हैं तो वृत्ति उस तरफ चली जाती है। यह बड़ी अच्छी खूबसूरत है, बुद्धि में आया ना। वास्तव में यह ख्याल भी चलना नहीं चाहिए। बाबा कहते हैं– यह तो दुनिया ही खत्म हो जानी है इसलिए तुम और सब भूल मामेकम् याद करो, ऐसे-ऐसे चित्र आदि क्यों देखते हो? **यह सब बातें वृत्ति को नीचे ले आती हैं।**

6] तुम्हारी फिर एम है जीवनमुक्ति की। .....तुम्हें गृहस्थ में रह पवित्र बनना है, राजाई लेना है। भक्ति में बहुत टाइम वेस्ट किया है। अभी समझते हो हमने कितनी भूलें की है।

❁ योग-

1] तुम यह भी जानते हो कि बाप को याद करते-करते हम पावन बन जायेंगे। नहीं तो फिर सजायें खानी पड़ेंगी।

2] भल कहाँ भी बैठे रहो, बुद्धि में बाप की याद रहे।

❁ धारणा-

1] तुम जानते हो अच्छी रीति पढ़ने से, याद करने से हम विश्व के मालिक बनते हैं। यह तो जरूर बुद्धि में चलना चाहिए। पहले बाप को याद करना पड़े।

2] 16 कला सम्पूर्ण बनने के लिए याद की मेहनत करती है। देखना है कि हम किसको दुःख तो नहीं देते हैं?

3] जो कुछ इन आंखों से देखते हो उनको याद न करो, इनसे ममत्व मिटा दो।

4] तुम जानते हो– अब हमारी लात नर्क की तरफ, मुँह स्वर्ग की तरफ है, वही याद रहता है। ऐसे याद करते-करते अन्त मती सो गति हो जायेगी। कितनी अच्छी-अच्छी बातें हैं जिनका सिमरण करना चाहिए।

5] सिर्फ हर कर्म करने से पहले उसके आदि-मध्य-अन्त तीनों काल चेक करके, समझ करके फिर कुछ भी करो तो शक्तिशाली बन परिस्थितियों को पार कर लेंगे।

❁ सेवा-

1] बस, सारा दिन बाप की सर्विस करें। ऐसे बाप का परिचय दें। बाप से यह वर्सा मिलता है।